भारत-चीन आर्थिक, व्यापार और निवेश सम्मेलन में प्रधानमंत्री का भाषण

14 जनवरी, 2008
पेइचिंग, चीन

विश्व की दो सर्वाधिक तेजी से विकसित हो रही अर्थ-व्यवस्थाओं से वाले देशों के पुरुष एवं महिला व्यापारियों के इस विशेष सम्मेलन में उपस्थित होकर मुझे बेहद प्रसन्नता हुई है। पूरा इतिहास साक्षी है कि व्यापारी मानव सभ्यता के प्रोत्साहक और संरक्षक रहे हैं। भारत-चीन आर्थिक, व्यापार और निवेश सम्मेलन के अवसर पर विशिष्ट व्यापारी यहां एकत्र हुए हैं, जो विश्व के सबसे अधिक आबादी वाले दो देशों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। महाद्वीप आकार के बाजारों से शुरूआत करते हुए आपने प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टि से विकास किया है और दुनिया के बाजारों को प्रेरित किया है। भारत और चीन के व्यापारी दोनों देशों के विकास की कहानी का प्रतीक हैं। व्यापारी सम्पदा के सर्जक हैं। इसलिए मैं आपकी गतिशीलता और उद्यमशीलता को नमन करता हूँ। आज की आपकी बैठक हमारे दो महान देशों के बीच आर्थिक सहयोग की संभावनाओं में आपके विश्वास की अभिव्यक्ति है। यह इस बात का भी प्रमाण है कि हमारे दोनों देशों के व्यापारिक समुदायों ने एक दूसरे के साथ मिलकर प्रगति की है। बहुत कुछ हासिल किया गया है, बहुत सारे काम पूरे किए गए हैं, किंतु मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अभी सर्वोत्कृष्ट उपलब्धियां हासिल की जानी बाकी है। भारत और चीन आज विश्व की दो सर्वाधिक विकासशील अर्थ-व्यवस्थाएं हैं। हमें यह याद रखना चाहिए कि 18वीं सदी के दौरान चीन, भारत और यूरोप की विश्व की आय में बराबर हिस्सेदारी थी। आज 21वीं सदी के प्रारंभ में भारत और चीन विकासशील वैश्विक अर्थ-व्यवस्था में अपना स्थान फिर से हासिल करने के प्रति कृतसंकल्प हैं। हमारे दोनों राष्ट्रों को यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना होगा कि एशिया के एकीकरण और आर्थिक पुनर्जागरण से लाभ उठाने के साथ-साथ हम उसमें योगदान भी करें। दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाएं आर्थिक विकास के इंजन बनती जा रही है और न केवल भारत और चीन को समान क्षेत्रीय फायदों के लिए अपने प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों, प्रौद्योगिकी एवं पूंजी का इस्तेमाल करना चाहिए, बल्कि पूरे विश्व को भी इसमें योगदान करना चाहिए। पिछले तीन वर्षों में भारतीय अर्थ-व्यवस्था की विकास दर हर वर्ष 9 प्रतिशत के आसपास रही है। हमारे बृहत् -आर्थिक बुनियादी तत्व अत्यंत सुदृढ़ हैं। हमने निवेश और विकास को बढ़ावा देने के लिए आर्थिक सुधार के उपायों की श्रृंखलाएं शुरू की हैं। हमारी बचत और निवेश दरें बढ़कर सकल घरेलू उत्पाद का 35 प्रतिशत हो गयी हैं। जनसंख्या में युवा आबादी की प्रधानता को देखते हुए इन दरों के और बढ़ने की संभावना है। हालांकि भारत पहले की तुलना में वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ अधिक तत्परता के साथ जुड़ चुका है, लेकिन हमारी अर्थव्यवस्था का विकास घरेलू बाजार के विस्तार से ही अधिक प्रेरित हुआ है। ये सभी घटक हमें विश्वास प्रदान करते हैं कि अगले पांच वर्षों में हमारी वार्षिक वृद्धि दर 10 प्रतिशत पर पहुंच जाएगी।

पिछले दो वर्षों में चीन के साथ हमारा द्विपक्षीय व्यापार दुगुना हो गया है। हमने 2008 के अंत तक द्विपक्षीय व्यापार को 20 अरब अमरीकी डॉलर पर पहुंचाने का जो लक्ष्य तय किया था, उसे निर्धारित समय से दो वर्ष पहले ही हासिल कर लिया गया। मुझे इस बात पर ताज्जुब है कि दोनों देशों की सरकारें अपने-अपने उद्योगों की क्षमताओं को कम करके आंक रही हैं और एक दूसरे के साथ व्यापार की उनकी सुदृढ़ आकांक्षाओं का सही आकलन नहीं हो पा रहा है। इसलिए मेरा प्रस्ताव है कि हमें अधिक महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय करने चाहिएं।

व्यापार के क्षेत्र में हमारे समक्ष चुनौती यह है कि चीन को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में विविधता लाई जाए। मैं भारतीय व्यापारियों से अपील करता हूं कि वे निर्यात की जाने वाली गैर परंपरागत वस्तुओं के विस्तार के लिए अधिक मुस्तैदी से अवसर जुटाने के प्रयास करें।

हमारे प्रतिस्पर्द्धात्मक विनिर्माण उद्योगों के अलावा भारत के पास एक विविधतायुक्त कृषि उत्पादन आधार रहा है। हमारे खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का भी तेजी से विकास हो रहा है और हम चीनी बाजार में गुणवत्तााायुक्त कृषि एवं समुद्री उत्पादों की आपूर्ति कर सकते हैं। इस व्यापार के विस्तार के लिए अनुकूल माहौल पैदा किया जाना चाहिए।

भारत के सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का योगदान 50 प्रतिशत से अधिक है जबकि चीन के सकल घरेलू उत्पाद में इसका योगदान 40 प्रतिशत है। भारत को विश्व के बाजारों में उच्च प्रौद्योगिकी सेवाएं स्थापित करने में पर्याप्त सफलता मिली है। भारत और चीन दोनों देशों के लिए सेवाओं में व्यापार के विस्तार के व्यापक अवसर उपलब्ध हैं। इन सेवाओं में निर्माण और इंजीनियरी, शिक्षा, मनोरंजन, वित्तीय सेवाएं, आईटी और आईटी सक्षम सेवाएं, परिवहन, पर्यटन और स्वास्थ्य शामिल हैं। हम इन सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रशासनिक रूकावटें दूर करने और नियामक कानूनों को सरल बनाने के लिए चीन की सरकार के साथ मिलकर काम करेंगे।

चीन की कंपनियां भारतीय बाजार में सक्रिय रूप से कार्यरत रही हैं और मैं इस धारणा का स्वागत करता हूं। मैं भली-भांति समझता हूं कि चीन की कंपनियों ने 12 अरब अमरीकी डॉलर मूल्य की परियोजनाओं के लिए अनुबंध किए हैं। भारत की बड़ी कंपनियों ने भी अन्य क्षेत्रों के अलाव फार्मास्युटिकल और साफ्टवेयर जैसे क्षेत्रों में चीन में संयुक्त उद्यम लगाए हैं या अनुषंगी कंपनियां स्थापित की हैं। मैं इसका भी स्वागत करता हूं।

हमें व्यापारिक समझौतों और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तथा विकास में सहयोग के जरिए आर्थिक सहयोग का आधार अवश्य सुदृढ़ करना चाहिए। हमें फार्मास्युटिकल, इस्पात, स्वास्थ्य देखभाल, आईटी और आटोमोबाइल जैसे परंपरागत क्षेत्रों में द्विपक्षीय निवेश को प्रोत्साहित करने के प्रयास करने चाहिए। इसके साथ ही हमारे उद्यमियों को नए क्षेत्रों जैसे- जैव प्रौद्योगिकी, आधुनिक पदार्थों, नवीकरणीय ऊर्जा और कम कार्बन वाली प्रौद्योगिकियों में सहयोग के अवसरों की तलाश भी करनी चाहिए।

इसलिए मैं सुझाव देना चाहूंगा कि दोनों देशों के उद्योग और वाणिज्य मंडलों को इन लक्ष्यों और उद्देश्यों को हासिल करने के लिए तीन सूत्री नीति अपनानी चाहिए। पहला यह कि आप भविष्य के लिए संयुक्त रूप से कार्यनीति योजना विकसित करें ताकि दोनों देश आर्थिक सहयोग का लक्ष्य तय कर सकें और उसे लागू करने का आधार तैयार कर सकें। इससे एक दीर्घावधि का नीतिगत परिप्रेक्ष्य सुनिश्चित किया जा सकेगा, जिसके माध्यम से भविष्य की ऐसी चुनौतियों और अवसरों का निर्धारण किया जा सकेगा जो हमारे आपसी संबंधों का मार्गदर्शन कर सकें।

दूसरे, हमें ऐसे लाभप्रद व्यापारिक मॉडलों का विकास करना चाहिए, जो हमारी पूरक और प्रतिस्पर्द्धात्मक ताकतों में और इजाफा कर सकें तथा भारत और चीन दोनों के बड़े बाजारों की विशेष जरूरतों को पूरा कर सकें। अवसर अनेक हैं और उनका दोहन करने में बुनियादी चीज मौलिकता है।

अंतिम लेकिन समान रूप से महत्वपूर्ण बात यह है कि आपको एक दूसरे के बाजारों, व्यापारिक रीति रिवाजों और प्रबंधकीय शैलियों में अंतरदृष्टि रखने की आवश्यकता है। अंतिम विश्लेषण में व्यापार करने का अर्थ है- समझबूझ विकसित करना और अपने भागीदारों में भरोसा रखना। इसके अतिरिक्त हमारे दोनों देशों के व्यापारिक समुदायों को बृहत्-आर्थिक दृष्टिकोण, नियामक व्यवस्थाओं और दोनों देशों में उद्यमों की प्रतिस्पर्द्धा को प्रभावित करने वाले घटकों की गहरी समझ विकसित करनी चाहिए।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि पिछले वर्ष दोनों देशों के बीच पर्यटकों की संख्या पांच लाख पर पहुंच गई और सीधे उड़ान सम्पर्क बढ़कर प्रति सप्ताह 22 पर पहुंच गयी हैं। यह उत्साहजनक बात है, लेकिन पर्याप्त नहीं है। हमें इस बढ़ते हुए परस्पर सम्पर्क को और बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही वीजा मंजूर करने की प्रक्रिया भी सरल की जानी चाहिए।

मैं इस अवसर पर उपस्थित विशिष्ट व्यक्तियों को आश्वासन देना चाहता हूं कि दोनों सरकारें व्यापार, निवेश और आर्थिक सहयोग बढ़ाने के लिए अनुकूल माहौल बनाने की दिशा में मिलकर काम करेंगी। इन प्रयासों में गैर-शुल्क बाधाओं को दूर करने, बौद्धिक सम्पदा अधिकारों की रक्षा और बाजार संबंधी विनिमय दरों जैसे मुद्दों का समाधान करने सहित समान अवसर प्रदान करने के उपाय भी शामिल करने होंगे। सभी देशों को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्द्धी अवश्य बनना चाहिए और यह प्रतिस्पर्द्धा सहयोग के प्रतिकूल अथवा विपरीत नहीं होनी चाहिए। औद्योगिक देश एक दूसरे के साथ निरंतर प्रतिस्पर्द्धा करें और यह ध्यान रखें कि उनके बीच यह प्रतिस्पर्द्धा रचनात्मक और परस्पर लाभप्रद रहे।

भारत और चीन के बीच आर्थिक सहयोग शांति और समृद्धि के लिए हमारी नीतिगत और सहयोग भागीदारी का अग्रणी सिद्धान्त बन गया है। विभिन्न क्षेत्रों में अनेक आपसी सहमति और समझौते पहले ही हो चुके हैं, जो हमारे आर्थिक सहयोग पर असर डालने वाली विभिन्न क्षेत्रीय बाधाओं का समाधान करने में सक्षम हैं। भारत और चीन को परस्पर लाभप्रद सहयोग की आदत विकसित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।

2003 में हमारी दोनों सरकारों ने आर्थिक सहयोग की संभावना का पता लगाने के लिए एक संयुक्त अध्ययन दल की स्थापना की थी। इसी परिप्रेक्ष्य में भारत-चीन क्षेत्रीय व्यापार समझौते की व्यवहार्यता के बारे में एक संयुक्त कार्यदल ने अपनी रिपोर्ट को अंतिम रूप दे दिया है। अपनी इस यात्रा के दौरान मैं चीन के नेताओं के साथ इस दिशा में और उपायों पर विचार-विमर्श करूंगा।

अंत में, मैं चीन के परिश्रमी और प्रतिबद्ध लोगों को पिछले 30 वर्षों में की गई तीव्र आर्थिक प्रगति के लिए बधाई देना चाहूंगा। तीन दशक पहले चीन में सुधार प्रक्रिया और अर्थव्यवस्था को मुक्त बनाने के प्रयास प्रारम्भ किये गए थे। मैं इस बेजोड़ सम्मेलन के आयोजन और दोनों देशों के व्यापारिक समुदायों की भागीदारी को संभव बनाने के लिए चीन की अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संवर्धन परिषद का आभार व्यक्त करता हूं। उसके प्रयासों से शांति, समृद्धि एवं विकास के लिए हमारी रणनीतिक एवं सहयोगात्मक भागीदारी को सार्थक तथा अधिक लाभप्रद बनाने में मदद मिली है।

******